भारत सरकार
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या: 1752
दिनांक 01 अगस्त, 2024

प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत एलपीजी कनेक्शन

† 1752. डॉ. विनोद कुमार बिंद:
श्री प्रताप चंद्र षडग्ड़ी:

क्या **पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत लगभग 10 करोड़ एलपीजी कनेक्शन दिए गए हैं;
(ख) प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के माध्यम से भारत में एलपीजी कवरेज बढ़ाने के लिए कौन-कौन सी कार्यनीतियां और प्रयास अपनाए गए हैं; और
(ग) उक्त पहल ने दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं और परिवारों पर विशेष ध्यान देते हुए ग्रामीण परिवारों के जीवन पर किस प्रकार सकारात्मक प्रभाव डाला है?

उत्तर
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री सुरेश गोपी)

(क): पूरे देश में गरीब परिवारों के वयस्क महिला सदस्यों के नाम पर बगैर जमानत राशि के एलपीजी कनेक्शन जारी करने के लिए दिनांक 01.05.2016 को प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) शुरू की गई थी। पीएमयूवाई का बुनियादी उद्देश्य ऐसे गरीब परिवारों को स्वच्छ रसोई ईंधन एलपीजी उपलब्ध करवाना और इसके द्वारा घरों में अत्यधिक वायु प्रदूषण फैलाने वाले पारंपरिक रसोई ईंधन जैसे जलाने की लकड़ी, कोयला, गाय के गोबर से बने उपले आदि के इस्तेमाल से जुड़े गंभीर स्वास्थ्य संबंधी खतरों को कम करके उनके स्वास्थ्य की रक्षा करना है। रसोई ईंधन के रूप में एलपीजी के इस्तेमाल से महिलाओं द्वारा जलाने की लकड़ी एकत्रित करने की नीरसता खत्म होती है और इससे खाना बनाने में लगने वाला समय भी कम हो जाता है तथा इससे वनों की कटाई की भी रोकथाम होती है। दिनांक 01.07.2024 की स्थिति के अनुसार पूरे देश में 10.33 करोड़ पीएमयूवाई कनेक्शन जारी किए गए हैं।

(ख) और (ग): देश में एलपीजी कवरेज बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कदम उठाए गए हैं जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ पीएमयूवाई को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलाना, पंजीकरण करने तथा कनेक्शन वितरित करने के लिए मेलों/शिविरों का आयोजन करना, घरों के बाहर होर्डिंगों (ओओएच), रेडियो जिंगलों, सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) वैनों आदि के जरिए संवर्धन, अन्य पारंपरिक ईंधनों की तुलना में एलपीजी के इस्तेमाल के फायदों के बारे में और एलपीजी पंचायतों के जरिए एलपीजी के सुरक्षित इस्तेमाल के बारे में जागरूकता फैलाना, विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत पंजीकरण/जागरूकता शिविर, पीएमयूवाई कनेक्शन प्राप्त करने के लिए आधार पंजीकरण तथा बैंक खाते खोलने के लिए उपभोक्ताओं और उनके परिवारों की मदद करना, एलपीजी कनेक्शन प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाना, www.pmuy.gov.in पर, निकटवर्ती एलपीजी वितरकों, कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) आदि पर पीएमयूवाई कनेक्शन के लिए ऑनलाइन आवेदन, 5 कि.ग्रा. डबल बॉटल कनेक्शन (डीबीसी) का विकल्प, 14.2 कि.ग्रा. के सिलिंडर को बदलकर 5 कि.ग्रा. का सिलिंडर लेने का विकल्प, प्रवासी परिवारों के लिए पते और राशनकार्ड के स्थान पर स्वघोषणा के आधार पर नया कनेक्शन प्राप्त करने का प्रावधान आदि शामिल हैं। इसके अलावा, ओएमसीज ख़ास तौर से ग्रामीण क्षेत्रों में सतत आधार पर नई एलपीजी डिस्ट्रीब्यूटरशिप्स चालू कर रही हैं। पीएमयूवाई योजना के शुरूआत से ओएमसीज ने पूरे देश में 7905 डिस्ट्रीब्यूटरशिप्स चालू किए हैं जिनमें से 7325 (अर्थात 93 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरत पूरी कर रही हैं (दिनांक 01.04.2016 से 30.06.2024 के दौरान चालू की गई)। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप पीएमयूवाई लाभार्थियों की प्रति व्यक्ति खपत बढ़कर 3.95 रीफिल्स प्रति वर्ष हो गई है। इसके अलावा, देश में एलपीजी कवरेज बढ़ी है और अप्रैल, 2016 में 62 प्रतिशत से बढ़कर अब अधिकतम तक पहुंच गई है।

स्वतंत्र अध्ययनों और रिपोर्टों में दिखाई दिया है कि पीएमयूवाई योजना का ग्रामीण परिवारों, खास तौर से महिलाओं तथा ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्रों में रह रहे परिवारों के जीवन पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कुछ प्रमुख फायदे संक्षेप में नीचे स्पष्ट किए गए हैं:-

(i) पीएमयूवाई के परिणामस्वरूप खाना बनाने के उन पारंपरिक तरीकों को छोड़ दिया गया है जिनमें लकड़ी, गोबर और फसल अपशिष्टों जैसे ईंधनों को जलाना शामिल था। अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छ ईंधन के इस्तेमाल से घरों में होने वाला वायु प्रदूषण कम हुआ है जिससे विशेष रूप से उन महिलाओं और बच्चों के श्वसन संबंधी स्वास्थ्य बेहतर हुआ है जो पारंपरिक तरीके से खाना बनाने के दौरान धुंएं के संपर्क में ज्यादा आते हैं।

(ii) ग्रामीण क्षेत्रों खास तौर से दूर दराज के स्थानों में रह रहे परिवार अपना अधिकांश समय और ऊर्जा पारंपरिक रसोई ईंधन इकट्ठा करने में खर्च करते हैं। एलपीजी से गरीब परिवारों की महिलाओं द्वारा खाना बनाने में होने वाली नीरसता और इसमें लगने वाले समय में कमी आई है। इस प्रकार उन्हें फुरसत का समय उपलब्ध होता है जिसका उपयोग वे आर्थिक उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कर सकती हैं।

(iii) बायोमास और पारंपरिक ईंधनों के स्थान पर एलपीजी का इस्तेमाल करने से खाना बनाने के प्रयोजनों के लिए लकड़ी तथा अन्य बायोमास पर निर्भरता कम हुई है जिससे वनों की कटाई तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव में कमी आई है। इससे न केवल परिवारों को फायदा मिलता है अपितु व्यापक तौर पर किए जाने वाले पर्यावरण संरक्षण संबंधी उपायों में भी इसका योगदान है।

(iv) खाना बनाने के लिए एलपीजी के इस्तेमाल से खुली आग से होने वाली दुर्घटनाओं का जोखिम कम होता है जो खास तौर से महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। खाना बनाने के पारंपरिक तरीके से जुड़ी आग से जलने और चोट लगने की दुर्घटनाएं कम हुई हैं जिससे अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित पारिवारिक माहौल बना है।

*****